श्री रामचन्द्र कृपालु

Shri Ramchandra Kripalu — Ram Stuti · Goswami Tulsidas

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम् ।
नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम् ॥१ ॥

कंदर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुंदरम् ।
पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरम् ॥२ ॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंशनिकंदनम् ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथनंदनम् ॥३ ॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणम् ।
आजानुभुज शर चापधर संग्रामजित खरदूषणम् ॥४ ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मनरंजनम् ।
मम हृदयकंज निवास कुरु कामादिखलदलगंजनम् ॥५ ॥